उपसर्ग

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» उपसर्ग की परिभाषा और अर्थ-परिवर्तन

प्रश्न 1 (आसान). 'हार' के आगे 'आ' लगने पर कौन-सा पद बनेगा और अर्थ क्या होगा?
उत्तर – आहार – अर्थ: भोजन

प्रश्न 2 (आसान). उपसर्ग का काम क्या है?
उत्तर – धातु/शब्द के पहले लगकर अर्थ बदलना

प्रश्न 3 (मध्यम). 'उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता' का मतलब क्या है?
उत्तर – उपसर्ग अकेला अर्थ नहीं देता; उसे धातु/शब्द के साथ लगाना पड़ता है

प्रश्न 4 (कठिन). एक ही मूल शब्द 'हार' पर अलग-अलग उपसर्ग लगने से अर्थ क्यों बदलता है? कारण लिखो।
उत्तर – क्योंकि उपसर्ग धातु/शब्द के पहले प्रयुक्त होकर उसका अर्थ-परिवर्तन करता है

» उपसर्ग + मूल शब्द/धातु से शब्दनिर्माण (उदाहरणों द्वारा)

प्रश्न 5 (आसान). 'हार' में 'आ' उपसर्ग लगे तो शब्द क्या बनेगा और अर्थ क्या होगा?
उत्तर – आहार – भोजन

प्रश्न 6 (आसान). 'हार' में 'सम्' उपसर्ग लगे तो शब्द क्या बनेगा और अर्थ क्या होगा?
उत्तर – संहार – नष्ट करना

प्रश्न 7 (मध्यम). किस बात का प्रमाण मिलता है कि उपसर्ग का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता? 'हार' के उदाहरण से समझाइए।
उत्तर – क्योंकि 'हार' अकेला 'माला' है, लेकिन उपसर्ग तभी जुड़कर नया शब्द और नया अर्थ बनाता है; उपसर्ग अकेला अर्थ नहीं देता।

प्रश्न 8 (मध्यम). 'हार' में 'वि' जोड़ने से नया शब्द कौन-सा बनता है और उसका अर्थ क्या होता है?
उत्तर – विहार – घूमना-फिरना

प्रश्न 9 (कठिन). मान लो धातु 'गम्' = जाना। उपसर्ग बदलते ही अर्थ कैसे बदलता है? एक वाक्य में प्रक्रिया लिखिए।
उत्तर – हर बार उपसर्ग धातु 'गम्' के पहले जुड़ता है, जिससे शब्दनिर्माण होता है और 'जाना' के साथ नया भाव/दिशा जुड़कर अर्थ बदल जाता है।

» गम् धातु पर उपसर्गों का प्रयोग: आ, उप, अनु, अव

प्रश्न 10 (आसान). 'आगच्छति' में उपसर्ग और अर्थ क्या होगा?
उत्तर – उपसर्ग 'आ'; अर्थ 'आना'।

प्रश्न 11 (आसान). 'अनुगच्छति' का अर्थ लिखो।
उत्तर – पीछे जाना/अनुसरण करके जाना।

प्रश्न 12 (मध्यम). 'अवगच्छति' में उपसर्ग कौन-सा है और अर्थ क्या है?
उत्तर – उपसर्ग 'अव'; अर्थ 'समझना'।

प्रश्न 13 (कठिन). तुम्हें पद 'अनुगच्छति' दिखता है। पहले उपसर्ग चिन्हित करो, फिर धातु बताओ, और अंत में सही अर्थ लिखो।

उत्तर – उपसर्ग 'अनु', धातु 'गम्', अर्थ 'पीछे जाना'।

» उपसर्ग जोड़ने का सही क्रम: पहले धातुरूप, फिर संधि-नियमों के अनुसार

प्रश्न 14 (आसान). प्र + गच्छति = ?

उत्तर – प्रगच्छति

प्रश्न 15 (आसान). अनु + करोति = ?

उत्तर – अनुकरोति

प्रश्न 16 (मध्यम). वि + हसति = ?

उत्तर – विहसति

प्रश्न 17 (कठिन). अधि + आस्ते = ?

उत्तर – अध्यास्ते (यण् सन्धि)

» लकार के साथ उपसर्गयुक्त रूप बनाना (लट्, लृट्/लङ्, लोट्, विधिलिङ्)

प्रश्न 18 (आसान). उपसर्ग 'वि' को 'हस्' धातु के 'लट् लकार' रूप ('हसति') के साथ जोड़कर लिखें।

उत्तर – विहसति

प्रश्न 19 (आसान). उपसर्ग 'सम्' को 'गम्' धातु के 'लोट् लकार' रूप ('गच्छतु') के साथ जोड़कर लिखें।

उत्तर – संगच्छतु

प्रश्न 20 (मध्यम). उपसर्ग 'प्रति' को 'स्था' धातु के 'लृट् लकार' रूप ('स्थास्यति') के साथ जोड़कर लिखें।

उत्तर – प्रतिस्थास्यति

प्रश्न 21 (कठिन). उपसर्ग 'अनु' को 'इष्' धातु के 'लङ् लकार' रूप ('ऐच्छत्') के साथ जोड़कर लिखें। ध्यान दें कि 'इष्' का 'लङ्' में 'ऐच्छत्' बनता है, और संधि भी करनी है।

उत्तर – अन्वैच्छत् ('अनु' + 'ऐच्छत्' में 'यण् संधि' हुई, 'उ' का 'व' और 'ऐ' जुड़कर 'वै' बन गया)

» उपसर्गों की सूची/प्रयोग-उदाहरण (प्र, परा, अप, सम्... अपि तक)

प्रश्न 22 (आसान). 'चौर: धनम् अपहरति।' यहाँ 'अप' का अर्थ-भाव क्या है?

उत्तर – धन को हटा/दूर ले जाना

प्रश्न 23 (आसान). 'सर्प: बिलाद् निस्सरति।' 'निस्' में कौन-सा भाव आता है?

उत्तर – अंदर से बाहर निकलना

प्रश्न 24 (मध्यम). 'पुत्री मातरं प्रत्यवददत्।' 'प्रति' किस प्रकार का बोध देता है?

उत्तर – उत्तर/जवाब देना

प्रश्न 25 (मध्यम). 'विद्वान् सर्वत्र अधिराजते।' 'अधि' का अर्थ-भाव लिखो।

उत्तर – ऊपर/प्रधान, श्रेष्ठ रूप से

प्रश्न 26 (कठिन). 'राम: भवन्तम् अवगच्छति।' अगर 'अव' हटा दें तो अर्थ में क्या कमी आएगी?

उत्तर – 'समझना/ठीक से भीतर पकड़ना' वाला भाव घट जाएगा; 'गच्छति' सिर्फ 'जाना' जैसा सामान्य हो जाएगा, अर्थ दिशा बदल जाएगी।

» अभ्यास: उपसर्ग-धातु पृथक्करण और वाक्य-पूर्ति

प्रश्न 27 (आसान). उपसर्ग-धातु अलग करो: "सुशोभते" (उपसर्ग और धातु लिखो)
उत्तर – उपसर्ग: सु | धातु: शोभ् (शोभते के रूप में)

प्रश्न 28 (आसान). वाक्य-पूर्ति: "गुरु: शिष्यस्य अज्ञानम् _____ । (उपहरति/अपहरति)"
उत्तर – अपहरति

प्रश्न 29 (मध्यम). उपसर्ग-धातु पृथक्करण: "निरगच्छन्" (उपसर्ग और धातु लिखो)
उत्तर – उपसर्ग: निर्/निः | धातु: गम् (गच्छ् के रूप में)

प्रश्न 30 (कठिन). वाक्य-पूर्ति: "अधयापक: प्रश्नान् पृच्छति। छछात्रा: _____ । (प्रतिवददन्ति/संवददन्ति)"
उत्तर – प्रतिवददन्ति

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. धातु/शब्द 'हार' में अलग-अलग उपसर्ग लगने पर अर्थ कैसे बदलता है? 'प्र', 'आ', 'सम्', 'वि' लगाकर पद और अर्थ लिखो।

› मूल शब्द 'हार' पहचानो–यह 'माला' के अर्थ में प्रयुक्त होता है।
› 'हार' के पहले उपसर्ग 'प्र' लगाओ–पद बनेगा 'प्रहार'।
› 'प्रहार' के लिए अर्थ लिखो: 'मारना'।
› अब 'हार' के पहले उपसर्ग 'आ' लगाओ–पद बनेगा 'आहार'।
› 'आहार' का अर्थ लिखो: 'भोजन'।
› अब 'हार' के पहले उपसर्ग 'सम्' लगाओ–पद बनेगा 'संहार'।
› 'संहार' का अर्थ लिखो: 'नष्ट करना'।
› अब 'हार' के पहले उपसर्ग 'वि' लगाओ–पद बनेगा 'विहार'।
› 'विहार' का अर्थ लिखो: 'घूमना-फिरना'।

उत्तर – हार='माला'। प्र+हार='प्रहार' (मारना)। आ+हार='आहार' (भोजन)। सम्+हार='संहार' (नष्ट करना)। वि+हार='विहार' (घूमना-फिरना)।

उदाहरण 2. दिए गए मूल/धातु 'गम्' (जाना) के साथ उपसर्ग 'प्र' जोड़कर अर्थ-परिवर्तन समझाइए: प्र + गम् कौन-सा भाव बनेगा?

› पहले मूल/धातु पहचानो: 'गम्' का अर्थ है 'जाना'।
› अब देखो उपसर्ग 'प्र' का काम क्या है–ये 'जाने' में एक नया भाव/दिशा जोड़ता है।
› उपसर्ग लगने से शब्दनिर्माण होता है: 'प्र + गम्' मिलकर नया रूप/शब्द बनाता है।
› इसलिए 'जाना' वाला सामान्य अर्थ बदलकर 'आगे/सामने की ओर जाना' जैसा नया भाव लेता है।

उत्तर – प्र + गम् में अर्थ-परिवर्तन होता है–'गम्' का 'जाना' सामान्य अर्थ लेकर 'प्र' नया भाव जोड़ता है, यानी 'आगे/सामने की ओर जाना' जैसी स्थिति बनती है।

उदाहरण 3. दिए गए पद 'उपगच्छति' में उपसर्ग और धातु पहचानकर अर्थ लिखो।

› पद 'उपगच्छति' में पहले उपसर्ग ढूँढो–यहाँ 'उप' साफ दिख रहा है।
› बचा हुआ भाग धातु से जुड़ा है–यह 'गम्' (गम्) का रूप/प्रयोग है।
› अब उपसर्ग 'उप' का अर्थ मानक रूप से लगाओ: 'उप + गम् उपगच्छति – पास जाना'।
› इसलिए पद 'उपगच्छति' का अर्थ लिखो: पास जाना।

उत्तर – उपसर्ग: उप, धातु: गम्; अर्थ: पास जाना (उपगच्छति)।

उदाहरण 4. अगर हमें 'निस्' उपसर्ग को सृज् (बनाना) धातु के लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन रूप के साथ जोड़ना हो, तो सही पद क्या बनेगा?

› पहला कदम: सृज् धातु का लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन रूप 'स्रक्ष्यति' है।

› दूसरा कदम: अब 'निस्' उपसर्ग को 'स्रक्ष्यति' के साथ जोड़ेंगे। यहाँ 'निस् + स्रक्ष्यति' में विसर्ग संधि (सत्व संधि) का नियम लगेगा।

› तीसरा कदम: 'निस्' के 'स्' का 'ष्' हो जाएगा क्योंकि 'स्' के बाद 'स्रक्ष्यति' का 'स्' आ रहा है, तो 'निष् + स्रक्ष्यति' बनेगा।

› चौथा कदम: फिर 'ष्' के बाद 'स' आने से 'ष्' का 'स्' हो जाता है (या 'स्' का 'ष्') और 'स्र' का 'श्र' हो जाता है (श चुत्व सन्धि)। यहाँ 'निष् + स्रक्ष्यति' में 'ष्' के बाद 'स्' आने से 'स्' का 'ष्' होकर 'निश्रक्ष्यति' नहीं बल्कि 'निस्स्रक्ष्यति' ही रहेगा क्योंकि 'षट्कोन' वाला 'ष' नहीं है। लेकिन, संस्कृत में 'निस्' के बाद 'स्' वाला वर्ण आने पर 'स्' का 'ष्' और फिर 'ष्' का 'श्' (चूँकि स आगे है) होता है। सरल भाषा में कहें तो 'निस्' और 'स्रक्ष्यति' के बीच विसर्ग संधि (सत्व संधि) का नियम लगेगा जहाँ 'स्' को 'श्' में बदल देंगे, तो 'निश्शृजति' या 'निस्सृजति' जैसा कुछ नहीं बल्कि 'निस्स्रक्ष्यति' ही रहेगा, क्योंकि 'स' का लोप नहीं होता। सही रूप 'निस्स्रक्ष्यति' बनेगा। यहाँ हम 'निस् + स्रक्ष्यति' को जब जोड़ते हैं, तो 'स' के बाद 'स' आने पर एक 'स' का लोप नहीं होता बल्कि 'निस्स्रक्ष्यति' बनता है।

› सुधार: 'निस्' + 'स्रक्ष्यति' में 'स्' का 'श्' या 'ष्' नहीं होगा, बल्कि 'निस्' का 'स्' जब 'स्र' से जुड़ेगा, तो 'निस्' का 'स्' 'ष्' में बदलेगा और 'स्र' का 'श्र' होगा तो 'निश्रक्ष्यति' बन सकता है। लेकिन व्याकरण के नियमानुसार जब 'निस्' और 'दुस्' के बाद 'स', 'ष' या 'श' से शुरू होने वाली धातु आती है, तो 'स्' यथावत् रहता है या विकल्प से 'श्' या 'ष्' होता है। यहाँ 'निस्' का 'स्' यथावत् ही रहेगा क्योंकि यह एक अपवाद है जहाँ विसर्ग संधि के नियम पूरी तरह लागू नहीं होते, या फिर कुछ विशेष नियम होते हैं। तो यहाँ 'निस् + स्रक्ष्यति' का सीधा-सीधा जोड़ 'निस्स्रक्ष्यति' ही होगा। 'निस्' के 'स' का 'ष्' या 'श्' नहीं होगा क्योंकि 'स्रक्ष्यति' में 'स' खुद है।

उत्तर – निस्स्रक्ष्यति

उदाहरण 5. उपसर्ग 'प्र' को 'भू' धातु के 'लट् लकार', 'लोट् लकार' और 'लङ् लकार' के रूपों के साथ जोड़कर दिखाइए।

› पहले 'भू' धातु के 'लट् लकार' के रूप को पहचानो: 'भवति' (होता है)। अब 'प्र' जोड़ो: 'प्रभवति' (उत्पन्न होता है)।

› अब 'भू' धातु के 'लोट् लकार' के रूप को पहचानो: 'भवतु' (होवे)। अब 'प्र' जोड़ो: 'प्रभवतु' (उत्पन्न होवे)।

› अब 'भू' धातु के 'लङ् लकार' के रूप को पहचानो: 'अभवात्' (हुआ था)। अब 'प्र' जोड़ो: 'प्र' + 'अभवात्'। यहाँ 'अ' और 'अ' मिलकर 'आ' बन जाएंगे 'दीर्घ संधि' से। तो यह बनेगा 'प्राभवात्' (उत्पन्न हुआ था)।

› ध्यान दें कि 'लट्' और 'लोट्' में कोई संधि नहीं हुई क्योंकि 'प्र' के 'अ' के बाद 'भवति' या 'भवतु' का 'भ' व्यंजन है। लेकिन 'लङ् लकार' में 'अभवात्' के 'अ' के साथ 'प्र' के 'अ' की संधि हुई।

उत्तर – लट् लकार: प्रभवति; लोट् लकार: प्रभवतु; लङ् लकार: प्राभवात्

उदाहरण 6. लट् लकार में 'गम्' धातु में 'अनु' उपसर्ग लगाकर सही पद बनाइए: 'अनुगच्छति' जैसा रूप।

› लट् लकार चुनो–धातुरूप का सामान्य आधार 'गच्छति' की तरह बनता है (गम् गच्छति)।

› अब धातुरूप के आगे 'अनु' जोड़ो: 'अनु + गच्छति'।

› संधि/उच्चारण के अनुसार जोड़कर अंतिम रूप लिखो: 'अनुगच्छति'।

उत्तर – अनुगच्छति

उदाहरण 7. हे प्रभो ! मयि ..... । (प्रसीददतु/प्रासीददतु)

› पहले वाक्य देखें: "हे प्रभो ! मयि ...।" यानी प्रभो प्रसन्न हों/कृपा करें–यह प्रार्थना/आदेश वाला भाव है।

› अब कर्ता-क्रिया मिलान: प्रभो (आप) कर्ता हैं, उनके लिए क्रियापद ऐसा चाहिए जो "प्रसीदतु/प्रसीददतु" जैसे अर्थ दे।

› विकल्पों में जो रूप प्रभो के लिए सही बैठता है, वही चुनो।

› इस वाक्य में सही रूप "प्रसीददतु" आता है।

उत्तर – हे प्रभो ! मयि प्रसीददतु ।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उत्तर में लिखो: “धातु/शब्द के पहले प्रयुक्त होकर अर्थ बदलता है” + “स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता”।

• उपसर्ग पहचानकर ही शब्दार्थ लिखो–सिर्फ अर्थ लिखने से अंक कट सकते हैं।

• पद में उपसर्ग पहचानते ही अर्थ उसी चार-मैपिंग से लिखो–गलती कम होगी।

• यह नियम 'उपसर्गप्रयोगेण शब्दनिर्माणम्' के प्रश्नों में बहुत काम आता है। अगर तुमने संधि का ध्यान नहीं रखा, तो तुम्हारे आधे नंबर कट सकते हैं, इसलिए ध्यान से करना।

• बोर्ड परीक्षा में, 'लङ्' और 'विधिलिङ्' लकार के साथ 'स्वर' से शुरू होने वाले 'धातु' रूपों में उपसर्ग जोड़ते समय 'संधि' का खास ध्यान रखना। अक्सर यहीं बच्चे गलती करते हैं।

• परीक्षा में उपसर्ग+अर्थ मिलान और सही पद-निर्माण में लकार-संधि दोनों जरूरी हैं।

• बोर्ड में वाक्य-पूर्ति में कर्ता-क्रिया और भाव (आदेश/प्रार्थना) देखकर विकल्प चुनो।

एक नज़र में रिवीज़न

› - पहले लगाओ, मतलब पलटाओ; उपसर्ग अकेला नहीं

› - हार + प्र/आ/सम्/वि = अर्थ बदलता है

› - आ=आना, उप=पास, अनु=पीछे, अव=समझ

› पहले धातुरूप, फिर उपसर्ग, संधि-नियमों से जोड़ना अनिवार्य।

› लकार + उपसर्ग: सही लकार रूप बनाओ, फिर उपसर्ग जोड़ो, स्वर-स्वर मिलें तो संधि करो।

› अनु=पीछे, अप=हटा, निर्/निस्=बाहर, उत्=ऊपर

› - उपसर्ग: शुरुआत से, धातु: शेष से; फिर लकार मिलाओ।